International Journal of Applied Research 2019; 5(9): 219-212

**ISSN Print:** 2394-7500
**ISSN Online:** 2394-5869
**Impact Factor:** 5.2
IJAR 2019; 5(9): 209-212
www.allresearchjournal.com
Received: 01-07-2019
Accepted: 05-08-2019

**रेनू उपाध्याय**
प्रवक्ता, किशोरी रमण इण्टर कॉलेज, मथुरा, उत्तर प्रदेश, भारत।

**Correspondence**
**रेनू उपाध्याय**
प्रवक्ता, किशोरी रमण इण्टर कॉलेज, मथुरा, उत्तर प्रदेश, भारत।

# विद्यार्थी हेतु निर्देशन आवश्यक्ता का अध्ययन

## रेनू उपाध्याय

**प्रस्तावना**

आज व्यक्ति का जीवन अत्यन्त ही तनावपूर्ण एवं जोखिमभरा है। कभी–कभी व्यक्ति न जाने किस दिशा की ओर भागे जा रहा है उसे स्वयं भी इस बात का पता नहीं होता। उसकी स्थिती किंकर्तव्यविमूढ़ के समान हो रही है। इस भौतिकवादी युग में औद्योगिक क्रान्ति एवं पारिवारिक विघटन के कारण मनुष्यों में जीवन के शाश्वत मूल्यों के प्रति अनास्था, अनिश्चतता व अस्थिरता से पूर्ण दृष्टिकोण, मानव की आकांक्षाओं में उत्तरोत्तर वृद्धि तथा मनुष्य की क्षमताओं का निरन्तर ह्रास जैसे मुख्य कारण उभरकर सामने आ रहे हैं। जिसका परिणाम हमें किसी न किसी रूप में सामाजिक पतन के रूप में दिखाई दे रहा है। यही कारण है कि आज प्रत्येक व्यक्ति पारिवारिक, सामाजिक, व्यावसायिक, आर्थिक एवं शैक्षिक आदि सभी क्षेत्रों किसी न किसी रूप में समस्याग्रस्त दिखायी दे रहा है। अतः व्यक्ति को जन्म से लेकर मृत्यु तक अपने घर, समाज, विद्यालय, व्यवसाय, नौकरी तथा दैनिक दिनचर्या इत्यादि सभी क्षेत्रों में उत्पन्न समस्याओं के समाधान के लिये किसी अनुभवी व्यक्ति की सहायता की आवश्यक्ता पड़ती है। दूसरे शब्दों में कहें तो उसे सही निर्देशन की महती आवश्यक्ता पग–पग पर होती है। इसलिए यहाँ हम विद्यार्थी हेतु निर्देशन आवश्यक्ता पर विचार कर रहे हैं।

एक प्रकार से हम निर्देशन उस प्रक्रिया को कह सकते हैं जिसके द्वारा किसी व्यक्ति की सहायता की जाती है। जिससे वह उचित निर्णय ले सके, निष्कर्ष निकाल सके तथा अपने वांछित उद्देश्यों की प्राप्ति कर सके। निर्देशन का प्रमुख उद्देश्य मानव को उसकी शक्तियों का ज्ञान करना है। इस प्रकार निर्देशन का कार्य व्यक्ति की अन्तर्निहित शक्तियों का चतुर्मुखी विकास करना तथा उसे समस्याओं का समाधान करने के योग्य बनाना है।

इस सम्बन्ध में 'चाइशोम' नामक विचारक ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा है– ''रचनात्मक उपक्रम तथा जीवन से सम्बन्धित समस्याओं की व्यक्ति में सूझ विकसित करना निर्देशन का उद्देश्य है ताकि वह जीवनभर अपनी समस्याओं का समाधान करने के योग्य बन सके।''

–पृ० 3, शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन तथा परामर्श

इसी प्रकार एक प्रसिद्ध लेखक 'लेस्टर डी क्रो' ने लिखा है– ''निर्देशन का तात्पर्य निर्देशन देना नहीं है, एक व्यक्ति का दृष्टिकोण दूसरे पर सौपना नहीं है, दूसरे व्यक्ति के लिए स्वयं निर्णय लेने की अपेक्षा निर्णय कर देना नहीं है और न ही दूसरे के जीवन का बोझ ढोना है। इसके विपरीत योग्य व सुप्रशिक्षित व्यक्ति द्वारा दूसरे व्यक्ति को चाहे वह किसी भी आयु वर्ग का हो अपनी जीवन क्रियाओं को स्वयं गठित करने, अपने निजी दृष्टिकोण को विकसित करने एवं स्वयं निर्णय ले सकने तथा अपना भार स्वयं वहन करने में सहायता करना ही वास्तविक निर्देशन है।''

–एन इन्ट्रोडेक्शन गाइडेन्स

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसे शिक्षा और व्यवसाय ही नहीं बल्कि सामाजिक कार्य, स्वास्थ्य, अवकाश का सदुपयोग, पारिवारिक सम्बन्ध आदि अनेक ऐसे क्षेत्र है जिसमें निर्देशन की आवश्यक्ता होती है। इस सम्बन्ध में ''यूनाइटेड ऑफिस ऑफ एजुकेशन'' में लिखा है–

''निर्देशन एक ऐसी प्रक्रिया है जो व्यक्ति का परिचय विभिन्न उपायों से जिनमें विशेष प्रशिक्षण भी सम्मिलित है तथा जिनके माध्यम से व्यक्ति की प्राकृतिक शक्तियों का बोध भी कराती है जिससे वह अधिकतम व्यक्तिगत एवं सामाजिक हित कर सके।''

– पृ०सं० 2, शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन तथा परामर्श

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि निर्देशन शिक्षा के सम्पूर्ण कार्यों के अधिक समीप है। जिस प्रकार शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य व्यक्ति का अधिकतम विकास करना है, उसी प्रकार निर्देशन अपनी वितरण एवं समायोजन सेवा द्वारा इस विकास में सुविधा प्रदान करता है। निर्देशन का प्रमुख उद्देश्य व्यक्ति में जीवन सम्बन्धी समस्याओं के प्रति अन्तर्दृष्टि पैदा करना है ताकि वह जीवन और अपनी समस्याओं का सामना एवं समाधान कर सके।

**माध्यमिक शिक्षा आयोग (1954) ने निर्देशन के प्रचार व मानव जीवन के लिए महत्वपूर्ण होने की दृष्टि से कुछ सुझाव दियेः**

1. भारतीय सरकार को विभिन्न राज्यों में इस प्रकार के निर्देशन केन्द्रों की व्यवस्था करनी चाहिए जो उत्तम निर्देशन प्रशिक्षण हेतु कार्य कर सकें।
2. शिक्षा निर्देशन के अतिरिक्त शिक्षा अधिकारियों के कार्यों पर अधिक ध्यान देना चाहिए।
3. देश की समस्त शिक्षण संस्थाओं में प्रशिक्षित निर्देशन अधिकारियों की नियुक्ति की जाये।
4. छात्रों की वैयक्तिक विभिन्नताओं व कार्य की प्रकृति के अनुरुप ही उन्हें व्यावसायिक अवसर प्रदान किये जाने चाहिये।

माध्यमिक शिक्षा आयोग के सुझावों से प्रभावित होकर सरकार के द्वारा 'कोठारी आयोग' की स्थापना की गयी। इस आयोग का उद्देश्य देश की शैक्षिक संरचना, शिक्षा की तत्कालीन स्थिति एवं उसकी शैक्षिक समस्याओं का व्यापक स्तर पर अध्ययन करना था।

**निर्देशन आवश्यक्ताओं के प्रकार**

विभिन्न विद्वानों ने निर्देशन आवश्यक्ता को कई भागों में बाँटा है। जो इस प्रकार हैः

**मैसलोः** मैसलो ने अपनी पुस्तक "The Psychology of Motivation" (1974) में मानव जीवन से सम्बन्धित आवश्यक्ताओं को एक क्रम में वर्णित किया हैः–

- सौन्दर्य आवश्यक्ताऐं
- आत्म बोध आवश्यक्ताऐं
- आत्म गौरव आवश्यक्ताऐं
- प्रेम एवं सम्बद्धता आवश्यक्ताऐं
- शारीरिक आवश्यक्ताऐं

–पृ०सं० 214, एडवांस एजूकेशन साइकॉलोजी

**विलियम मार्टिन प्रोक्टरः** इन्होंने सन् 1930 में निर्देशन के छह रूप प्रस्तुत किये, जो निम्नवत हैंः–

- व्यवसायिक निर्देशन।
- शैक्षिक निर्देशन।
- समाजिक एवं नागरिक कार्यों में निर्देशन।
- स्वास्थ्य व शारीरिक समस्याओं में निर्देशन।
- चरित्र–निर्माण क्रियाओं में निर्देशन।
- अवकाश के समय का उत्तम उपयोग के लिए निर्देशन।

–पृ०सं० 24, शैक्षिक एवं व्यवसायिक निर्देशन

**पैटरसनः** इन्होंने भी निर्देशन आवश्यक्ताओं से सम्बन्धित अपना वर्गीकरण प्रस्तुत किया, जिसमें निर्देशन के पाँच प्रकार बताये :–

- शैक्षिक निर्देशन।
- व्यावसायिक निर्देशन।
- व्यक्तिगत निर्देशन।
- स्वास्थ्य सम्बन्धी निर्देशन।
- आर्थिक निर्देशन।

–पृ०सं० 21, शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन तथा परामर्श

**इन उपर्युक्त विचारकों का अध्ययन करने पर हम निर्देशन आवश्यक्ताओं को निम्न भागों में बाँट सकते हैं**

1. **शैक्षिक निर्देशन आवश्यक्ता –** शैक्षिक निर्देशन के चार प्रमुख कार्य हैं। शिक्षार्थी की क्षमता, रुचि एवं साधनों के अनुरूप शैक्षिक योजना का निर्माण करना, शिक्षार्थी की भावी संभावनाओं के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करना, शैक्षिक कार्यक्रम में वांछित प्रगति हेतु सहायक होना तथा विद्यार्थियों की आवश्यक्ताओं को भली–भाँति पूर्ण करने के लिये शिक्षालय कर्मचारियों, पाठ्यचर्याओं एवं प्रशासनिक परिवर्तनों से सम्बन्धित सुझाव देना।
2. **व्यावसायिक निर्देशन आवश्यक्ता –** व्यावसायिक निर्देशन का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति को इस योग्य बनाना है कि वह अपने व्यवसाय से समुचित सामंजस्य स्थापित कर सके। अपने में निहित मानवीय शक्ति का प्रभावी उपयोग कर सके तथा उपलब्ध सुविधाओं द्वारा समाज का आर्थिक विकास कर सके।
3. **व्यक्तिगत निर्देशन आवश्यक्ता –** व्यक्तिगत निर्देशन का तात्पर्य व्यक्ति को प्रदत्त उस सहायता से है, जो उसके जीवन में समस्त क्षेत्रों तथा अभिवृत्तियों के विकास को दृष्टि में रखकर उचित समायोजन की दिशा में निर्दिष्ट होता है।
4. **सामाजिक निर्देशन आवश्यक्ता –** सामाजिक, आर्थिक एवं औद्योगिक परिवर्तनों का प्रभाव निश्चित रूप से मानव के जीवन पर पड़ता है। सामाजिक निर्देशन के अन्तर्गत बदलते हुए सामाजिक परिवेश में बालक के समुचित समायोजन, मानव संसाधनों का समुचित उपयोग व अवकाश का समुचित उपयोग आदि करते हैं।
5. **मनोवैज्ञानिक निर्देशन आवश्यक्ता –** कोई व्यक्ति अपने भावी जीवन में क्या बनेगा यह उसके व्यक्तित्व पर निर्भर करता है। मनोवैज्ञानिक निर्देशन के द्वारा व्यक्ति में संवेगात्मक सन्तुलन बनाये रखने, व्यक्ति का विकास, समाज से समुचित समायोजन व व्यक्ति की मानसिक समस्याओं में सहायता प्रदान की जाती है।

**इसी सन्दर्भ में निर्देशन पर विभिन्न आयोगों तथा संगठनों के द्वारा किये गये सर्वेक्षण तथा उनके परिणाम आगे प्रस्तुत किया जा रहा है**

1. **योजना आयोग (1965)–** योजना आयोग ने साक्षात्कार पद्धति से 15 से 29 वर्ष के शिक्षित नवयुवकों पर किया गया। जिसका उद्देश्य किशोरों की मानवशक्ति का पर्याप्त प्रयोग करने में सहायता प्रदान करना तथा शिक्षा व व्यवसाय चयन सम्बन्धित विसंगति का अन्वेषण करना था। योजना आयोग ने अपने अध्ययन से निष्कर्ष निकला कि ''पत्राचार मजदूर संघ'' के 15 से 29 वर्ष के शिक्षित बेरोजगार नवयुवकों में से केवल 11.5 प्रतिशत युवकों को ही रोजगार मिला है जबकि इनका लक्ष्य 33.2 प्रतिशत को रोजगार प्राप्त कराना था।

–पृ०सं० 7, गाइडेन्स एण्ड काउन्सलिंग

2. **एज्यूकेशनल गाइडेन्स (1979)–** इसके द्वारा 13 सदस्यीय विद्यार्थियों की सलाहकार समिति बनायी गयी जोकि विभिन्न

विश्वविद्यालयों में कार्य करती थी। इसके अनुसार भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय ने योग्य विद्यार्थियों के लिए शैक्षिक निर्देशन की आवश्यक्ता व महत्त्व को स्वीकारा व इस सन्दर्भ में एक सर्वेक्षण किया। इस सलाहकार समिति ने इंग्लैण्ड में आई०सी०एस०, एफ०आर०सी०एस०, बार एट लॉ जैसी उच्च शिक्षा ग्रहण कर रहे छात्रों के लिए अच्छी निर्देशन सेवा स्थापित की। बाद में इसका क्षेत्र अन्य देशों तक फैल गया और विदेशों से वापस आने वाले छात्रों को उपयुक्त व्यवसाय प्राप्ति में सहायता करना भी इसके कार्य क्षेत्र में आ गया।

इस सर्वेक्षण के परिणाम स्वरूप छात्रों को अपने भविष्य के बारे में सोचने तथा योजना बनाने में सहायता मिली। छात्रों को भारत तथा विदेशों में हो रहे शैक्षिक विकास, शैक्षिक क्रियाऐं तथा अवसरों के बारे में तथा उच्च शिक्षा से सम्बन्धित अध्ययनों की सूचना तथा प्रशिक्षण की जानकारी मिली। छात्रों के लिए शैक्षिक सूचनाऐं प्राप्त करने के लिए पुस्तकालयों की सहायता की आवश्यक्ता पर बल दिया।

–पृ०सं० 6, गाइडेन्स एण्ड कॉउसलिगं इन कॉलेज एण्ड यूनिवर्सटीज स्टूडेन्ट्स

3. **वोकेशनल गाइडेन्स (1956)–** इस अध्ययनकर्ता समूह ने सन् 1956 में शिक्षित बेरोजगार छात्रों का अध्ययन करने के लिए विश्वविद्यालयों में व्यूरों की स्थापना पर बल दिया। इस समूह का मुख्य उद्देश्य छात्रों को व्यवसाय सम्बन्धी सूचना तथा कैरियर निर्देशन प्रदान करना था।
इस समूह ने अपने अध्ययन से निष्कर्ष निकाला कि यह व्यूरो विश्वविद्यालय के सभी छात्रों की आवश्यक्ताओं को पूरा करने का प्रबन्ध कर सकती है चाहे यह छात्र अभी अध्ययनरत हो चाहे अध्ययन समाप्त करके चले गये हों। इसके प्रयत्नों के परिणाम स्वरूप वर्तमान समय में कुछ विश्वविद्यालयों में दोनों तरह के छात्र सलाहकार समिति तथा विश्वविद्यालय सूचनासमिति स्थापित है और वर्तमान समय में 72 विश्वविद्यालय व्यावसायिक सूचना तथा निर्देशन समिति के रूप में भारत में कार्य कर रहे हैं।

–पृ०सं० 9, गाइडेन्स एण्ड कॉउसलिगं इन कॉलेज एण्ड यूनिवर्सटीज स्टूडेन्ट्स

4. **विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (1956)–** निर्देशन के क्षेत्रों में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने श्रम मन्त्रालय व शिक्षा मन्त्रालय की सलाह के आधार पर कॉलेज विद्यार्थियों के लिए कैरियर निर्देशन की आवश्यक्ता को महसूस किया। इसका उद्देश्य सभी विद्यालयों में कैरियर सलाहकार समिति व इकाईयों को स्थापित करना था। इस अध्ययन के परिणाम स्वरूप कुछ चयनित विद्यालयों में सलाहकार समितियाँ स्थापित की गयी।

–पृ०सं० 9, गाइडेन्स एण्ड कॉउसलिगं इन कॉलेज एण्ड यूनिवर्सटीज स्टूडेन्ट्स

5. **शैक्षिक व व्यावसायिक निर्देशन संघ (1975)–** इस समूह के द्वारा कॉलेज जाने वाले विद्यार्थियों की विभिन्न आवश्यक्ताओं के सन्दर्भ में एक सर्वेक्षण किया गया। इसके लिए 17 विश्वविद्यालयों के 3000 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में लिया गया। सर्वेक्षण विद्यार्थियों की आवश्यक्ताओं से सम्बन्धित था। 50 प्रतिशत से अधिक छात्रों की 11 समस्याओं को चिन्हित किया गया। चार शीर्षकों –अध्ययन आदतों और कौशल कैरियर चुनाव, अभिवृत्ति एवं योग्यता का ज्ञान तथा यौन शिक्षा के अन्तर्गत 11 क्षेत्रों को सार रूप में लिया गया।
परिणाम स्वरूप इन विद्यार्थियों ने बताया कि उनके अभिभावक ही केवल निर्देशन व सहायता प्रदान करने वाले एक मात्र हैं। कॉलेज निर्देशनकर्ताओं की तरफ से कोई सहायता प्रदान नहीं की जाती है। कॉलेज व छात्रवास में रहने वाले 80 प्रतिशत विद्यार्थियों ने गैर पारिवारिक स्रोतों द्वारा प्रदान की जाने वाली निर्देशन सेवा की आवश्यक्ता पर बल दिया। उनकी प्रमुख आवश्यक्ता रोजगार के क्षेत्र में निर्देशन प्राप्त करना था। निर्देशन संघ ने अपने अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला कि जो कुछ निर्देशन सेवा विद्यार्थियों को दी जाती है वह एक बड़ी मशीन में छोटे से पुर्जे के समान है।

–पृ०सं० 7, गाइडेन्स एण्ड काउन्सलिंग

6. **उमरुद्दीन व गादरी(1980)–** इसका उद्देश्य शैक्षिक व्यावसायिक और व्यक्तिगत क्षेत्रों से सम्बन्धित समस्याओं का अध्ययन करना था। इस अध्ययन में कॉलेज हॉस्टल में रहने वाले असमायोजित विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों, व्यावसायिक चयन, पारिवारिक सम्बन्धों और मानसिक सम्बन्धी समस्याओं पर विचार किया गया।
परिणाम में अध्ययनकर्ताओं ने अपने सर्वेक्षण से यह निष्कर्ष निकाला कि इन दृष्टिगोचर समस्याओं व तथ्यों ने नियोजनकर्ताओं तथा प्रशासकों को छात्रों का व्यक्तिगत रूप से व्यक्तित्त्व का विकास करने के लिए एक पर्याप्त परामर्श तथा निर्देशन सेवा कार्यक्रम बनाने के लिए बाध्य कर दिया। उनके इस निर्देशन कार्यक्रम ने सामाजिक व व्यावसायिक जागरुकता, आध्यात्मिक और क्रियात्मक प्रवीणता, अनुशासन तथा विश्वास पर प्रभाव डाला।

–पृ०सं० 9, गाइडेन्स एण्ड कॉउसलिगं इन कॉलेज एण्ड यूनिवर्सटीज स्टूडेन्ट्स

7. **दिल्ली विश्वविद्यालय (1950–1954)–** इसका उद्देश्य छात्रों की शिक्षा के दुरुपयोग तथा स्थिरता के अभाव में सहायता से सम्बन्धित सर्वेक्षण करना था। यह अध्ययन 1800 स्नातक तथा परास्नातक विद्यार्थियों पर किया गया। इसके परिणाम स्वरूप पाया गया कि सामान्यतया इन छात्रों के द्वारा उन उद्देश्यों की पूर्ती नहीं की गयी जो कि सेकेण्ड्री स्कूल की परीक्षा के उपरान्त निर्धारित किये गये। जबकि 45 प्रतिशत विद्यार्थियों ने विश्वविद्यालय स्तर की मैरिट सूची में स्नातक से निम्न स्तर पाया। ज्यादातर विद्यार्थियों ने स्नातक स्तर पर लिये गये प्रशिक्षण का अपने व्यवसाय के रूप में चयन तथा प्रयोग नहीं किया।

– पृ०सं० 10, गाइडेन्स एण्ड कॉउसलिगं इन कॉलेज एण्ड यूनिवर्सटीज स्टूडेन्ट्स

8. **डी०जी०ई० एण्ड टी मिनिस्ट्री ऑफ लेबर (1962)–** इसका उद्देश्य छात्रों में अपव्यय व अवरोधन में सहायता का अध्ययन करना था। इसमें 1950 के स्नातक स्तर के छात्रों पर अध्ययन किया गया। जिसमें वाणिज्य वर्ग के क्लर्क 67 प्रतिशत, बी०एस०सी० उत्तीर्ण 63 प्रतिशत, बी०ए० उत्तीर्ण 64 प्रतिशत, कानून में प्रविणता के 48 प्रतिशत, एम०ए० आर्टस् 31 प्रतिशत, बी०ए० आनर्स 25 प्रतिशत के विद्यार्थियों को लिया गया।

इस अध्ययन के द्वारा यह निष्कर्ष निकाला गया कि विद्यार्थियों के पास पर्याप्त मात्रा में व्यावसायिक योग्यता है फिर भी वह क्लर्क के रूप में कार्य कर रहे हैं।

– पृ०सं० 10, गाइडेन्स एण्ड कॉउसलिगं इन कॉलेज एण्ड यूनिवर्सटीज स्टूडेन्ट्स

**9. जे०एस०गौरी (1970)–** एन.सी.ई.आर.टी नई दिल्ली, शिक्षा के आधार व शैक्षिक मनोविज्ञान से सम्बन्धित विभाग। इसका उद्देश्य विद्यालय की विषयगत उपलब्धि पता लगाना। शिक्षा के प्रति छात्रों के व्यवहार में आये सकारात्मक परिवर्तन का अध्ययन करना तथा उक्त छात्रों के प्रति अध्यापकों के दृष्टिकोण में सकारात्मक परिवर्तन का अध्ययन करना था। इसके लिये सरकारी हॉयर सैकेण्ड्री स्कूल के आठवीं व नवी कक्षा के 28 छात्रों को न्यादर्श के रूप में चुना गया।
परिणाम में स्कूल के प्रथम उपलब्धि परीक्षण में दो समूहों का अधिकतम भूल का प्रसार परामर्श द्वारा पड़ने वाले प्रभाव को अर्थपूर्ण रूप में दर्शाता नहीं है। जबकि द्वितीय परीक्षण की उपलब्धि पर्याप्त मात्रा में प्रयोगात्मक विद्यार्थियों के समूह पर परामर्श प्रक्रिया के पड़ने वाले प्रभाव को दर्शाता है। अध्यापकों का दृष्टिकोण प्रयोगात्मक समूह के छात्रों के प्रति .05 लेबल पर परामर्श प्रक्रिया के पहले व बाद में भिन्न है। परामर्श प्रक्रिया ने छात्रों की अभिवृत्ति व व्यवहार में कोई अर्थपूर्ण परिवर्तन नहीं किया।

–द सेकेण्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन, पृ०सं० 218

**10. मूले (1972)–** मूले ने किशोरों की आवश्यक्ता तथा समस्या के सन्दर्भ में अध्ययन किया। उन्होंने पाया कि शहरी विद्यार्थियों की अपेक्षा ग्रामीण विद्यार्थियों में सम्प्राप्ति प्रेरणा अधिक सार्थक होती है। शहरी विद्यार्थियों में भी जो उच्च व निम्न सामाजिक स्तर के थे वह सामान्य उच्च सम्प्राप्ति प्रेरणा रखते हैं। किशोर अपनी आवश्यक्ता के प्रति अधिक सचेत थे। लड़कियाँ परिवर्तन आवश्यक्ता, प्रभुत्व आवश्यक्ता व सम्प्राप्ति आवश्यक्ता में अग्रिम थी।

–ग्रामीण व शहरी छात्र छात्राओं की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

**11. ए०भटनागर और गुप्ता (1988)–** इसका उद्देश्य कम समयावधि सामूहिक निर्देशन कार्यक्रम का कैरियर चयन के निर्णय पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन। इस अध्ययन में लिंग भेद पर भी विशेष रूप से अध्ययन किया गया तथा उन्होंने पाया कि निर्देशन कार्यक्रम की मध्यस्थता के कारण व्यस्कों का परिपक्वता प्रतिशत बढ़ गया। लड़के व लड़कियों का लिंग भेद उनकी कैरियर परिपक्वता में कोई महत्व नहीं रखता।

–5वॉ सर्वे ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, पृ०सं० 226

**12. आर०के०सारस्वत (1992)–** इसका उद्देश्य नवोदय विद्यालय के छात्रों के लिए आवश्यक्ताओं पर आधारित कार्यक्रम का विकास से सम्बन्धित अध्ययन करना था। इसके लिए नवोदय विद्यालय के 6वीं कक्षा के 500 विद्यार्थियों को चुना गया। इन्होंने अपने अध्ययन से निष्कर्ष निकला कि अधिकांशतः छात्रों ने निर्देशन कार्यक्रम को छात्रों की भलाई के लिए एक प्रतिशत व कुशल निर्देशनकर्ता की देखरेख में आयोजित करने का सुझाव दिया।

–5वॉ सर्वे ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, पृ०सं० 228

**13. सिद्धू (2000)–** इसका उद्देश्य उच्च एवं निम्न संकट वाली माताओं तथा उनके बच्चों द्वारा अनुशासन की प्रवृत्ति और अपराध की तीव्रता का ज्ञान करना था। इसके लिए 100 छात्रों जो कि 10–12 आयु वर्ग के थे को लिया गया तथा अध्ययन के उद्देश्य में उनकी माताओं को भी सम्मिलित किया गया।
इसका परिणाम उच्च कष्ट सहन करने वाली माताओं ने प्रत्येक अपराध को गम्भीरता से लिया जबकि कम कष्ट वाली महिलाओं ने इतना नहीं। उच्च कष्ट वाली माताओं के बच्चों ने कम कष्ट वाली माताओं के बच्चों की तुलना में सामाजिक व विवेकपूर्ण अपराधों के विषय में अधिक गम्भीरता से सोचा।

–इण्डियन एजुकेशनल एवस्ट्रेक्टस, पृ०सं० 249

**उपसंहार–** प्रस्तुत अध्ययन के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि विद्यार्थियों में निर्देशन सम्बन्धी आवश्यक्ताऐं अधिक होती हैं। अतः विद्यालयों, परिवारों तथा समाज के द्वारा बिना किसी भेदभाव के सभी विद्यार्थियों को प्रत्येक क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए उचित निर्देशन प्रदान करना चाहिए। विद्यालय व अन्य संस्थाओं के द्वारा शैक्षिक व्यवसायिक, मनोवैज्ञानिक, शरीरिक तथा सामाजिक क्षेत्रों में विद्यार्थियों को आवश्यक निर्देश प्रदान किया जाना चाहिए।

**सन्दर्भ**


1. कोचर, एस०के०, लेखक, गाइडेन्स एण्ड कॉउसलिगं इन कॉलेज एण्ड यूनिवर्सटीज स्टूडेन्ट्स
2. गुप्ता, कु० नीना, लघुशोध, ग्रामीण व शहरी छात्र छात्राओं की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन (लघुशोध, आगरा विश्वविद्यालय, 1993–94)
3. गौरी, जे०एस०, एन्साइक्लोपीडिया, द सेकेण्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन (एन्साइक्लोपीडिया, पृ०सं० 218)
4. चतुर्वेदी, डॉ० शर्मा एवं डा० शिखा, लेखक, शैक्षिक एवं व्यवसायिक निर्देशन (मेरठ, आर० लाल बुक डिपो, तृतीय संस्करण 2000)
5. चौहान, एस०एस०, लेखक, एडवांस एजूकेशन साइकॉलोजी (छठवॉ संस्करण, सन् 1974)।
6. डी, क्रो लेस्टर तथा एलिर क्रो, लेखक, एन इन्ट्रोडेक्शन गाइडेन्स (दिल्ली, यूरेशिया पब्लिशिंग हाउस, सन् 1962)।
7. नायक, ए० के०, लेखक, गाइडेन्स एण्ड काउन्सलिंग
8. भटनागर व गुप्ता, एन्साइक्लोपीडिया, 5वॉ सर्वे ऑफ एजुकेशनल रिसर्च (एन्साइक्लोपीडिया, 1988–92)
9. सिद्धू, इण्डियन एजुकेशनल एवस्ट्रेक्टस, (वेल्यूम–2, पृ.सं. 249, जरनल ऑफ कम्यूनिटी गाइडेन्स, रिसर्च वेल्यूम–17 '3' '254' सन् –2000)
10. सिंह व उपाध्याय, डॉ०रामपाल व डॉ०राधाबल्लभ, लेखक, शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन तथा परामश (आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर, 12 वॉ संस्करण 1989)।